CHARACTER DEVELOPMENT IN DIFFERENT STAGES

शैशवावस्था में चारित्रिक विकास
(CHARACTER DEVELOPMENT IN INFANCY)

शिशु के चारित्रिक विकास का स्वरूप निम्नांकित होता है–

1. 3 माह तक शिशु को अपने उचित या अनुचित आचरण के सम्बन्ध में किसी प्रकार का ज्ञान नहीं होता है।

2. 1 वर्ष की आयु में वह बड़े लोगों की इच्छानुसार आचरण करना जान जाता है।

3. 2 वर्ष की आयु में वह अपने अच्छे या बुरे कार्यों के अनुसार अपने को 'अच्छा लड़का' या 'खराब लड़का' समझने लगता है।

4. 2 वर्ष की आयु में वह बहुत स्वार्थी होता है और अपने खिलौने में किसी भी बच्चे को साझीदार नहीं बनाता है।

5. 3 वर्ष की आयु तक वह अनैतिक प्राणी रहता है, पर यह समझने लगता है कि उसे बड़ों के आदेशों के अनुसार कार्य करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से उसका हित होता है।

6. 4 वर्ष की आयु में वह अच्छे और बुरे कार्यों में अन्तर समझने लगता है। इसीलिए, वह अपने टूटे हुए खिलौने को या तो छिपा देता है या उसे तोड़ने का दोष किसी और पर लगाता है।

7. 5 वर्ष की आयु में वह अपने माता-पिता की इच्छाओं के अनुसार कार्य करने लगता है और उनके मूल्यों को बिना समझे हुए स्वीकार करने लगता है।

संक्षेप में, हम **क्रो एवं क्रो** (Crow and Crow, *Child Psychology*, p. 161) के शब्दों में कह सकते हैं–"जैसे-जैसे शिशु बड़ा होता जाता है वैसे-वैसे अच्छाई और बुराई, आज्ञा-पालन और आज्ञा-उल्लंघन एवं ईमानदारी और बेईमानी उसके मौखिक शब्दकोश के अंग बन जाते हैं।"

बाल्यावस्था में चारित्रिक विकास
(CHARACTER DEVELOPMENT IN CHILDHOOD)

बाल्यावस्था में बालक के चरित्र का विकास निम्नांकित क्रम में होता है–

1. किसी समूह का सदस्य बनने के कारण बालक का दूसरे बालकों से सम्पर्क स्थापित होता है। फलस्वरूप, उसके आचरण में परिवर्तन होना आरम्भ हो जाता है।

2. बालक विभिन्न परिस्थितियों में उचित और अनुचित में अन्तर करना जान जाता है।

3. बालक, न्याय और ईमानदारी के प्रति प्रबल भावनाएँ व्यक्त करने लगता है।

4. बालक, परिवार के एक विशेष सदस्य और विद्यालय के एक विशेष शिक्षक की आज्ञा अधिक तत्परता से पालन करता है।

5. बालक, घर में स्वार्थपूर्ण और अनुचित, पर विद्यालय में निःस्वार्थ और उचित व्यवहार करता है।

6. बालक कम-से-कम मौलिक रूप से चोरी करने, झूठ बोलने, धोखा देने, छोटे बच्चों या छोटे पशुओं को कष्ट पहुँचाने और शेखी मारने की निन्दा करने लगता है।

7. बालक झूठ बोलना कम कर देता है, माता-पिता से अधिक धन प्राप्त करने के लिए उनके कार्य करता है और अपने से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण परिस्थितियों में सत्य बोलने का प्रयास करता है।

8. **कोलेसनिक** (Kolesnik) (p. 477) के अनुसार–बालक कुछ सिद्धान्तों को समझने, स्वीकार करने और प्रयोग करने लगता है। वह इन सिद्धान्तों पर आधारित अपने व्यवहार के प्रभाव पर विचार करने लगता है।

9. **स्ट्रैंग** (Strang) (p. 289) के अनुसार–**"6, 7 और 8 वर्ष के बालकों में विवेक, न्याय, ईमानदारी और मूल्यों की भावना का विकास होने लगता है।"**

संक्षेप में, हम **क्रो एवं क्रो** (Crow and Crow) (*op. cit.*, p. 164) के शब्दों में कह सकते हैं– **"बाल्यावस्था में बालकों में नैतिकता की सामान्य धारणाओं या नैतिक सिद्धान्तों के कुछ ज्ञान का विकास हो जाता है।"**

किशोरावस्था में चारित्रिक विकास
(CHARACTER DEVELOPMENT IN ADOLESCENCE)

किशोरावस्था में किशोर के चरित्र का विकास अधोलिखित प्रकार से होता है–

1. किशोर एक आदर्श व्यक्ति की कल्पना करके, उसके समान बनने का प्रयास करता है।

2. किशोर अपने समूह, परिवार और पड़ौस के व्यक्तियों से सामंजस्य करने में कठिनाई का अनुभव करता है।

3. किशोर अपने व्यवहार को निर्देशित करने के लिए वैयक्तिक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का निर्माण करता है।

4. किशोर दूसरे व्यक्तियों से वार्तालाप करके, अपने विचारों, मूल्यों, विश्वासों, धारणाओं और दृष्टिकोणों की तुलना करता है।

5. **मेडिन्निस** (Medinnus and Johnson) के अनुसार–किशोर, धर्म की संकीर्णता को त्याग कर सहिष्णुता और मानवधर्म का समर्थन करता है।

6. **मेडिन्निस** (Medinnus and Johnson) के अनुसार–किशोर अपनी संस्कृति के व्यवहार के प्रतिमानों का तो अनुसरण करता है, पर उसके आधारभूत मूल्यों को स्वीकार नहीं करता है।

7. किशोर के चरित्र की कुछ मुख्य विशेषताएँ हैं–चिन्ता, उच्च आदर्श, शक्तिशाली कल्पना, आत्माभिमान, स्वतन्त्रता के प्रति प्रेम, धार्मिक रीति-रिवाजों में अविश्वास, प्रतिद्वन्द्विता की भावना, अधिकारियों के विरुद्ध विद्रोह, विचारों की चंचलता, भावनाओं की प्रबलता और मनोभावों में अकारण एवं आकस्मिक परिवर्तन।

संक्षेप में, हम **पैक एवं हैविंगहर्स्ट** (Peck and Havinghurst) के शब्दों में कह सकते हैं– **"प्रौढ़ावस्था में प्रवेश करने के समय तक किशोर स्थायी नैतिक सिद्धान्तों का निर्माण कर लेता है, जिनके आधार पर वह अपने स्वयं के कार्यों का मूल्यांकन और निर्देशन करता है।"**

–The Psychology of Character Development, p.8.